ISBN 978-93-84110-80-2

अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी की कार्यवाही

हिन्दी भाषा, साहित्य और संस्कृति

संपादक

प्रो. के. के. वेलायुधन

प्रो. वी. जी. गोपालकृष्णन

अस्मिता 2018

27,28,29 दिसंबर

दक्षिण भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन

Scanned by CamScanner

संपादक

प्रो. के. के. वेलायुधन

प्रो. वी. जी. गोपालकृष्णन

संपादक मंडल

प्रो. टी. एन. विश्वंभरन

डॉ. के. जी. प्रभाकरन

डॉ. ऋषिकेशन तंपी

प्रो. पी. रवि

डॉ. बी. विजयकुमार

डॉ. प्रभाकरन हेब्बार इल्लत

डॉ. वी. के. सुब्रह्मण्यन

ISBN : 978-93-84110-80-2

© विकल्प, तृशूर

प्रथम संस्करण : दिसंबर 2018

मूल्य : 500/-

प्रकाशक

दक्षिण भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन, तृशूर, केरल - 680 013

पुस्तक भवन, कान्कोल पी. ओ., पय्यन्नूर - 670 307 के सहयोग से।

हिन्दी भाषा, साहित्य और संस्कृति

Hindi Language, Literature and Culture

Scanned by CamScanner

तुलनात्मक साहित्य का महत्व	: वैष्णव पी.वी	213
तुलनात्मक साहित्य: "अंधा युग और करुता दैवते तेटी' के परिप्रेक्ष्य में	: डॉ वृंदा विजयन	217
हिंदी और असमिया के चुने गए आँचलिक उपन्यास तुलनात्मक अध्ययन	: शहीदुल इस्लाम खान	219
केदारनाथ सिंह और ओ.एन.वी. कुरुप की कवितओं का तुलनात्मक अध्ययन	: डॉ. प्रिया ए.	225
नासिरा शर्मा और अनुराधा शर्मा पूजारी के उपन्यासों में स्त्री: एक तुलनात्मक अध्ययन	: सिराज़ुल हक	228
'जंगल का दावेदार" और "कोमरम भीम" उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन	: राठोड सुरेश	231
वर्तमान हिंदी और मलयालम पारिस्थितिक कविताओं में तुलनात्मक अध्ययन की संभावनाएँ	: षिजु एस. जी.	244
समकालीन हिंदी और मलयालम कहानी; आतंकवाद के विशेष संदर्भ में	: बिनसी बालचंद्रन	249
भारतीय संस्कृति और साहित्य : अनुवाद के निकष पर	: उर्मिला शुक्ल	251
हिंदी साहित्य में अनुवाद (भाषा के संदर्भ में)	: विद्या राज	255
फिल्मी अनुवाद की चुनौतियाँ	: मैमूना पी	257
अनुवाद की चुनौतियाँ	: डॉ. अशोक मर्डे	259
अनुवाद की चुनौतियाँ	: ग्रीष्मा एलिज़बत	261
अनुवाद की चुनौतियाँ	: जितिना पी.	264
अनुवाद की चुनौतियाँ	: अरुण के. पी.	266
तकनीकी क्षेत्र में हिंदी भाषा की स्थिति	: डॉ. सूर्यकुमारी पावुला	269
तकनीकी अनुवाद के क्षेत्र में कंप्यूटर सार संक्षेप	: डॉ. श्रीदेवी एस.	279
तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी भाषा	: शाली पद्मावती पी.	281
विज्ञान एवं तकनीकी श्रेत्र में हिन्दी भाषा का प्रबाव	: षिजित के. के.	285
पत्रकारिता में हिंदी	: मुरलीधरन. पी	290
हिंदी पत्रकारिता: सफलताएँ एवं चुनौतियाँ	: डॉ. आशालता. जे	293
पत्रकारिता में हिंदी	: अश्वती पी. वी.	295
हिंदी साहित्य और किन्नर जीवन	: शेलके प्रकाश	297
वर्तमान संदर्भ में हिंदी	: सुप्रिया इ.	299
हिंदी भाषा का वैश्विक परिदृश्य	: जिनो पी वर्गीस	301
राजभाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग एवं संवैधानिक प्रावधान	: हेलन मेरी ए. जे.	303

Scanned by CamScanner

वर्तमान संदर्भ में हिंदी

सुप्रिया इ.

भारत में अनेक भाषाएं हैं लेकिन हिंदी सबसे अधिक व्यापक क्षेत्र में और सबसे अधिक लोगों द्वारा समझी जानेवाली भाषा है । हमारे राष्ट्र केलिए गर्व की बात है कि अपनी एक राष्ट्रभाषा है । हर व्यक्ति अपनी भावनाओं को अपनी भाषा में ही अच्छी तरह व्यक्त कर सकता है । हिंदी केवल हिंदी भाषियों की ही भाषा नही है, वह तो भारतीय जनता के हृदय की वाणी बन गयी है । सर्वोच्च सत्ता प्राप्त भरतीय संसद ने देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है । अब यह अखिल भारत की जनता का निर्णय है । संसार में चीनी के बाद हिंदी सबसे विशाल जनसमूह की भाषा है । आक्सफोर्ड की अंग्रेज़ी ने भी हिंदी से पराठा, अचार, और लस्सा आदि शब्दों को ले लिया है क्यों कि यह बाज़ार की आवश्यकता है और हिंदी ने पेन, ट्रेन जैसे अनेक शब्दों को लिया है । परंतु यह दो सौ वर्षों के अंग्रेज़ी शासनकाल के कारण माना जा सकता है । लेकिन अभी जो आमबोलचाल की हिंदी भाषा है, कम से कम उसे तो विकृत होने से बचाया जाना चाहिए ।

जनता पर समाचार पत्र, फिल्में और टी.वी का गहरा प्रभाव डालते हैं । भाषा के पुष्ट होने या उसके भ्रष्ट होने का दोष भी इन्हीं पर सर्वाधिक है । नुक्सान हिंदी का भी हो रहा है । हमारे सुविधा के अनुसार हमने भाषा को मोड दिया है । हिंदी दिवस भारत में हर वर्ष 14 सितंबर को मनाया जाता है । हिंदी विश्व में बोली जानेवाली प्रमुख भाषाओं में एक है । विश्व की प्राचीन और सरल भाषा होने के साथ-साथ हिंदी हमारा राष्ट्रभाषा भी है । हिंदी भाषा दुनिया भर में हमें सम्मान भी दिलाती है । हिंदी ने हमें विश्व में एक नई पहचान दिलाई है । हिंदी भाषा विश्व में सबसे ज्यादा बोलनेवाली तीसरी भाषा है । भारत की स्वतंत्रता के बाद 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने एकमत से यह निर्णय लिया कि हिंदी की खडीबोली ही भारत की राजभाषा होगी । धीरे-धीरे हिंदी का प्रचलन बढा और इस भाषा ने राष्ट्रभाषा का रूप ले लिया ।

हमारी भाषा हमारे देश और संस्कारों का प्रतिबिंब है । हिंदी हिंदुस्थान की भाषा है । राष्ट्रभाषा किसी भी देश की पहचान और गौरव होती है । कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक हर व्यक्ति हिंदी भाषा आसानी से समझ लेता है । पहले अंग्रेज़ी को उतना महत्व नहीं दिया करते थे । लेकिन बदलते समय के साथ अंग्रेज़ी अपना स्थान हासिल किया, इसकी वजह से हमारी राष्ट्रभाषा को हमें एक दिन के नाम से मनाना पड रहा है । पहले स्कूलों में अंग्रेज़ी का माध्यम ज्यादा नहीं होता था लेकिन आजकल देश के बडे-बडे स्कूलों में पढनेवाले बच्चे हिंदी में पिछड़ रहे हैं और उन्हें ठीक से हिंदी पढ़ना और लिखना भी नहीं आती है । भारत में रहकर हिंदी को महत्व न देना भी हमारी गलती है । दुनियाभर में हिंदी जाननेवाली या बोलनेवाले को बज़ार में अनपढ के रूप में देखा जाता है या हिंदी बोलनेवालों को समाज तुच्छ नज़र से देखते है । हम ही अपनी देश में हिंदी भाषा को मान-सम्मान नहीं दे पा रहे हैं । यदि हम अंग्रेज़ी में बात करते है तो गर्व महसूस करते है । कोई बडे-बडे मंच पर या कुछ कार्यक्रम में खडे होकर अंग्रेज़ी में बात करना गर्व समझता है लेकिन हिंदी में बात किए तो सुननेवालों के दिमाग में आपके प्रति एक बुरा नज़र बनती है । इन्हीं कारणों से लोग हिंदी बोलने से डरते है । हिंदी दिवस मनाने का उद्देश्य गुम हो रही हिंदी को बचाने का प्रयास है । कोई भी व्यक्ति को अगर हिंदी के अलावा अन्य कोई भाषा जैसे फ्रेंच, स्पानिष आदि का ज्ञान हो तो उसे अपनी ज़िंदगी में ऊँचाई पर चढने की नज़र आती है ।

आजकल हिंदी विश्व में व्याप्त भाषाओं में दूसरी भाषा के रूप में नज़र आती है । मीडिया, पत्रकारिता, शिक्षा आदि अनेक क्षेत्रों में हिंदी का प्रयोग हो रहा है । दो सौ वर्ष पूर्व हिंदी काव्य की भाषा नहीं थी । पहले खडीबोली भाषा

Scanned by CamScanner